जून 2026

अंक 9

अंतरदेश

सरहदों के पार हिंदी का संसार

अंतरदेश

सरहदों के पार हिंदी का संसार

जून 2026, अंक 9

संपादक

हंसा दीप

यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो, कनाडा

सहायक संपादक

वेदप्रकाश सिंह

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

परामर्श मंडल:

अडेलै हेनिश-टेम्बे, लाइप्त्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी
आनंद वर्धन शर्मा, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एरिका करांति, तूरीन विश्वविद्यालय, इटली
दिव्यराज अमिय, त्युबिंगन विश्वविद्यालय, जर्मनी और ज़्यूरिख विश्वविद्यालय स्विट्जरलैंड
राम प्रसाद भट्ट, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी
ली यालान, बीजिंग फ़ॉरन स्टडीज़ यूनिवर्सिटी, चीन
शिव कुमार सिंह, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल

स्थायी संपर्क पता:

नॉटनल, स्वत्वाधिकार © 2024
16/1454, इंदिरा नगर, लखनऊ- 226016, उत्तर प्रदेश, भारत
antardesh.patrika@gmail.com

अंतरदेश से जुड़े क़ानूनी विवाद लखनऊ उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आएँगे। मौखिक और लिखित रचनाओं और कृतियों में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, नॉटनल, संपादक और संपादक मंडल के नहीं।

अनुक्रम

- **संपादकीय** – कैंसर: देह से परे 5

पत्रकारिता विशेष

- शताब्दी पूरी करके इतिहास रचती पत्रिका-वीणा – वीणा के विशेषांक – मीनाक्षी स्वामी 8

स्मृति शेष

- बशीर साहब की शायरी के 'अल्फाज़ और ख़ामोशी के अंतर्संबंध' - विवेक रंजन श्रीवास्तव 20

शोध आलेख

- जापान में भारतीय संगीत - तोमोका मुशिगा 27
- हिन्दी आदिवासी कविताएँ और अस्तित्व का प्रश्न – आनंद दास 37

आलेख

- विश्व की महान समृद्ध संस्कृति का ध्वजवाहक है हिन्दू नववर्ष-गोवर्द्धन दास बिन्नाणी 52

कहानी

- अनोखा रिश्ता – कविता विकास 57
- थर्ड जेंडर – रंजना जायसवाल 66
- कृष्ण-कृष्णा और कुंज - यशोधरा भटनागर 74
- हकीकत - कृष्ण कुमार यादव 80
- सात रंग के सपने – आभा श्रीवास्तव 86

- बात एक सुबह की – ममता त्यागी 91

कविता

- संजय सिंह 99
- चमन लाल शर्मा 101
- सुबोध श्रीवास्तव 102
- श्रद्धा श्रीवास्तव 104
- मृदुल शर्मा 106

यात्रा संस्मरण

- जापान यात्रा और भारत-जापान संबंधों का बहुआयामी परिप्रेक्ष्य – अमित गुप्ता 107

लघुकथा

- अशोक गुजराती 114
- सपना चंद्रा 118

स्थायी स्तंभ- प्रकृति और संस्कृति

- एक चौराहे पर आठ - प्रेम रंजन अनिमेष 121

हिंदी छात्र परिशिष्ट

- सांद्रा लुटावन, सूरीनाम, दक्षिण अमेरिका 130

सिरचन की मुक्ति – जीवन के एक दिन 15 जुलाई 2070 का वर्णन

- अलीस राथगेबर, बर्लिन, जर्मनी 133

- शियम प्रभाहर, ज्यूरिख़ विश्वविद्यालय, स्विट्ज़रलैंड 134
- सोफ़िया रोथ, ज्यूरिख़ विश्वविद्यालय, स्विट्ज़रलैंड 135
- अथिका हिम्मेलबर्गर, स्विट्ज़रलैंड 137
- श्रुति सिंघल, भारत, स्विट्ज़रलैंड 139

(रेखाचित्र गूगल से साभार)

कैंसर: देह से परे

जब मेहनत का फल शून्य मिले, जब परीक्षा, केवल परीक्षा ही लेती रहे, जब अपनों से धोखा मिले, जब प्रेम के तार टूट जाएँ, और जब अकेलापन भीतर तक चबा-चबा कर खा जाए, और, और, और भी बहुत कुछ।

यह किसी कहानी का हिस्सा नहीं, आज के कठिन दौर का सच है। एक ऐसा समय, जहाँ युवा आए दिन स्वयं को आत्महत्या, हत्या जैसे रास्तों की ओर धकेलते जा रहे हैं। शरीर स्वस्थ है, पर मन बीमार है। हताशा, अवसाद, नफरत, ईर्ष्या, कटुता, और नकारात्मकता, एक से दूसरी, दूसरी से तीसरी कड़ी जुड़कर बनती एक भयावह लंबी शृंखला। मनोग्रंथियों के ऐसे विषाणु, जो धीरे-धीरे इंसान को खोखला करने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

ये बिखराव पहले भी समाज में मौजूद थे, लेकिन आज इनका रूप-रंग, आकार-प्रकार तेजी से बदला है। नए-नए कारण हैं, नए-नए माध्यम हैं। ट्रोलिंग है, टांग-खिंचाई है। अंकों के गणित से तिल-तिल मरते छात्र हैं, प्रताड़ना झेलती शिक्षित युवतियाँ हैं। फूहड़ कॉमेडी है, सार्वजनिक उपहास, हदों को पार करके चौबीस घंटों सिर पर सवार है। आग में घी डालने का काम सोशल मीडिया बड़ी मुस्तैदी से, चतुराई से कर रहा है। लाइक्स और फॉलोअर्स की संस्कृति ने नाम और काम को ऐसा मोड़ दिया है जहाँ

चर्चा और प्रसिद्धि पाने के लिए गिरावट, निम्नता और नीचता की गहराइयाँ मायने नहीं रखतीं।

एक ओर मानसिक जंग से जूझते युवा हैं, तो दूसरी ओर एकाकीपन से लड़ते अल्ज़ाइमर और डिमेंशिया की चपेट में आते उम्रदराज़ लोग। कलाकारों की दुनिया तो और भी अधिक त्रस्त है। लेखन से लेकर अभिनय तक। कलाबाजी- साहित्यबाजी के पैंतरे ही पैंतरे, नींद-चैन उड़ाने में माहिर। किसी को किसी के नाम से नफरत है, किसी को किसी के काम से, हैसियत से। इस कैंसर को फैलाते लाखों बैक्टीरिया किसी कीमोथैरेपी से नहीं मरते, इंसान को मार कर ही दम लेते हैं।

स्त्री-त्रासदी की बात करें तो पुराने निष्कर्ष अक्सर काम नहीं आते। एक समय था, जब उसकी पीड़ा को घूँघट, चौखट, अशिक्षा और आर्थिक निर्भरता के संदर्भ में समझा जाता था। माना जाता था कि उसके पास निर्णय लेने की स्वतंत्रता और साहस नहीं है। आज हालात बदल चुके हैं। वह शिक्षित है, आत्मनिर्भर है, आधुनिकता के हर दाँव-पेंच से परिचित भी। ब्यूटी सलोन से लौटती है, दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलती है, फिर भी कभी मौत चुन लेती है, तो कभी उस घर में बनी रहती है जहाँ मौत का खतरा मौजूद है। तमाम सहज धारणाओं को चुनौती देते अनेक प्रश्न उसके साथ ही राख में बदल जाते हैं।

आखिर क्यों आज का युवा इतना असहाय हो गया है, क्यों एक क्लिक से जुड़ती दुनिया अब रास नहीं आ रही! निगेटिविटी के पसरते पाँव थमने का नाम नहीं लेते।